कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 16-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

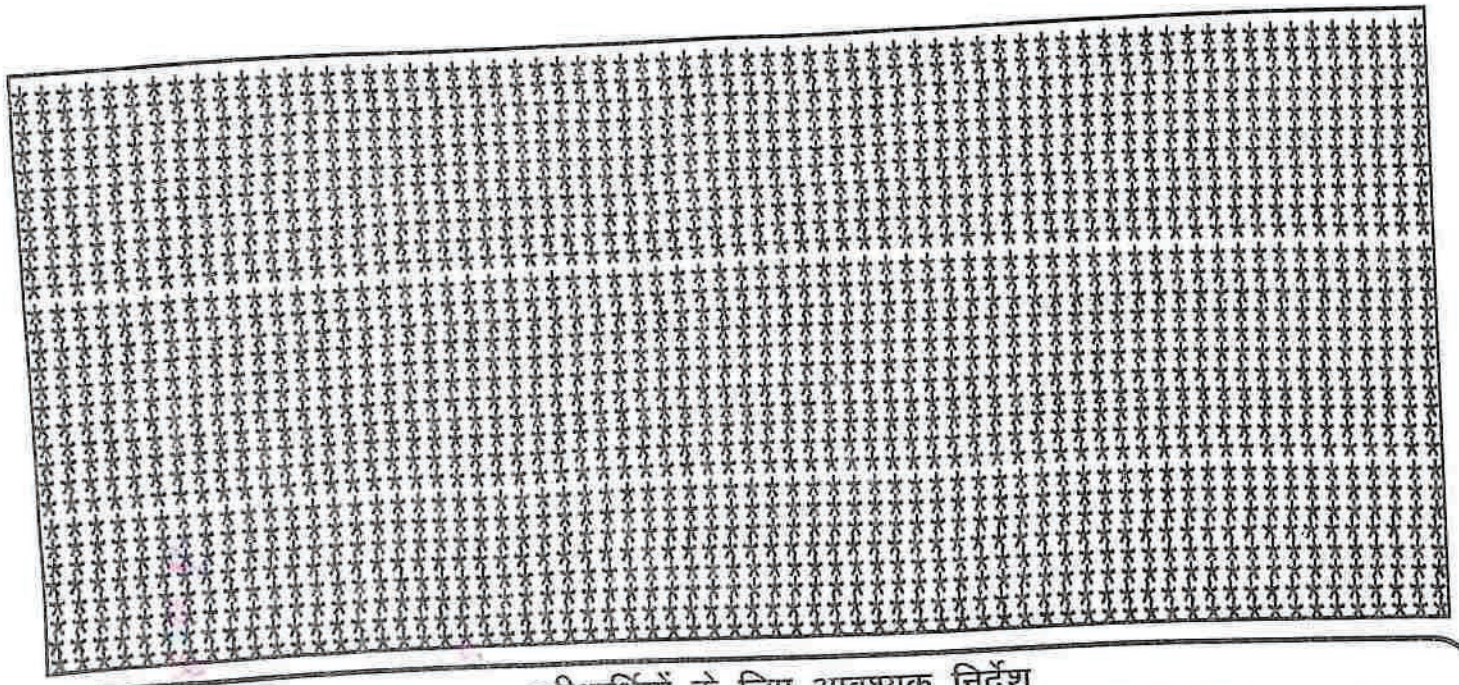

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, कलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिख कर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्ष समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक के 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ का उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

खण्ड - 1 परीक्षार्थी उत्तर

1. शिक्षित व जागरूक नारी।

2. नारियां आत्मविश्वास से इसलिए भर गई हैं क्योंकि उनमें शिक्षा का प्रचार और प्रसार किया गया है।

3. आधुनिक नारी ने आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया क्योंकि गाँधीजी के एक आह्वान पर बहुत सी महिलाएँ घर-बार छोड़कर देश की आजादी के लिए संघर्ष करने निकल पड़ीं। चाहे वो गाँव की, छोटे कस्बे की, शहर की, महानगर की, शिक्षित हों या गरीब, अमीर सभी वर्गों की नारियों ने आजादी की लड़ाई में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाया।

4. प्रस्तुत कविता में एक सोये हुए आदमी को जगाने की बात कही गई है।

5. आदमी को वक्त पर जगाना इसलिए आवश्यक है क्योंकि यदि वह वक्त पर नहीं जागेगा तो वह घबरा कर उन लोगों को पाने की कोशिश करेगा जो उससे आगे निकल गए हैं।

6. कवि के अनुसार घबरा के भागने और क्षिप्र गति में यह अंतर है कि क्षिप्र गति तो सही समय में तय की जाती है तथा घबरा कर भागने से कोई कार्य कुशलतापूर्वक नहीं किया जा सकता अर्थात् क्षिप्र गति घबरा कर की गई गति से सर्वथा श्रेष्ठ, उत्तम है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड-3

9. क्रिया :-
वह शब्द या शब्द समूह जिससे किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है वह क्रिया कहलाती है। कर्म के आधार पर क्रिया के दो अग्रांकित भेद हैं।
i सकर्मक क्रिया – कर्म की सत्ता उपस्थिति
ii. अकर्मक क्रिया – कर्म की सत्ता अनुपस्थिति ।

10. 'पत्र मोहन के द्वारा लिखा गया'। इस वाक्य में
काल :- सामान्य भूतकाल
वाच्य :- कर्मवाच्य
कारक :- मोहन के द्वारा – करण कारक
पत्र :- कर्म कारक

11. गजानन शब्द में निहित समास बहुव्रीहि है। अर्थात् गज के जैसा आनन है जिसका वह है – गणेशजी
बहुव्रीहि समास में दोनों पदों में से कोई सा पद प्रधान न होकर अन्य पद की प्रधानता होती है तथा वह सामासिक पद किसी अन्य शब्द का पर्यायवाची होता है।

12. (क) मुझे अभी जाना है।

(ख) मेरे पास पचास रुपये मात्र हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

13. (क) अगर-मगर करना :- बहाने बनाना ।

(ख) आपे से बाहर होना :- अपने वश में नहीं रहना ।

14 अंधेर नगरी चौपट राजा :- अराजकता प्रशासन ।

खण्ड-4

15. " बूझत स्याम कौन . . . . . .

. . . . . राधिका गोरी ।"

प्रसंग :- प्रस्तुत काव्यांश भक्तिकाल में सगुण भक्ति के अंतर्गत कृष्ण भक्ति काव्यधारा के लब्ध प्रतिष्ठित सिरमौर कवि, वात्सल्य रस के अप्रतिम सम्राट, अष्टछाप के प्रमुख कवि 'सूरदासजी' द्वारा रचित उनकी सर्वश्रेष्ठ काव्य कृति 'सूरसागर' के 'राधा कृष्ण प्रथम मिलन' प्रसंग से अवतरित है।

सूरदासजी अंधे कृष्ण भक्त कवि थे जिनकी प्रशंसा में चार चाँद लगाते हुए किसी आलोचक ने लिखा है—

" तत्व-तत्व सूरा कही तुलसी कही अनूठ
बची-खुची कबिरा कही और कही सब झूठ।"

सूरदासजी ने सूरसागर में अनेक मार्मिक प्रसंगों यथा कृष्ण जन्म, कृष्ण की बाल लीला, राधा कृष्ण मिलन आदि का बड़े ही हृदयस्पर्शी, चित्ताकर्षक, प्रभावोत्पादक, चित्रोपमता से परिपूर्ण स्वाभाविक प्रसंग का वर्णन प्रस्तुत काव्यांश में किया है जहाँ राधा कृष्ण से मिलती है तथा उनकी खूबियों और

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

स्वामियों को व्याज स्तुति में कह जाती है तथा कृष्ण भोली राधा को अपनी मधुर बातों से उलझा लेते हैं।

व्याख्या:- अष्टछापी कवि 'सूरदासजी' राधा कृष्ण के प्रथम मिलन का वर्णन करके कहते हैं कि जब राधा जी अपनी सहेलियों के साथ जाती हुई श्रीकृष्ण के संपर्क में आती है तो अपरिचय की दीवार कृष्ण की पहल से टूटती है। श्रीकृष्ण पूछते हैं कि गोरी आप कौन हो? आप कहाँ रहती हो तथा किसकी बेटी हो? हमने तो आपको पहले कभी ब्रज की इन गलियों में नहीं देखा।

श्रीकृष्ण के ऐसे परिचयात्मक प्रश्नों को सुनकर राधा कहती है कि हम ब्रज की इन गलियों में क्यों आए हम तो अपनी ही गली में खेलती हुई रहती है तथा हमने तो यह सुना है कि नंद का कोई पुत्र है जो दूध-दही, माखन की चोरी करता हुआ रहता है तथा हम तो उससे ही मिलने आए हैं।

श्रीकृष्ण इस आरोप को सुनकर बोले कि हमने आपका क्या चुराया है आप तो हमारे साथ जोड़ी बना कर खेलने चलो तथा राधा कृष्ण के ऐसे ही प्रश्नों में उलझ गई अर्थात् रसिक व्यक्तियों में शिरोमणि श्रीकृष्ण ने बातों में ही भोली राधा को उलझा लिया तथा अपने साथ खेलने ले गए इस प्रकार सूरदासजी ने प्रस्तुत काव्यांश के माध्यम से अपने आराध्य श्रीकृष्ण की वाक्पटुता और विदग्धता चरितार्थ कर दी है।

विशेष:- 1. प्रस्तुत काव्यांश में राधा के करुणाभरी उपालंभ तथा कृष्ण का वाकचातुर्य स्पष्ट है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

II काव्यांश में राधा–कृष्ण मिलन का मार्मिक चित्रांकन है।
अनुप्रास अलंकार की मनोरम छटा दर्शनीय है।
III
— बातनि भुरई राधिका भोरी ।

IV पद शैली का प्रयोग किया है।
· शृंगार रस का प्रयोग किया है।
V
माधुर्य काव्य गुण का प्रयोग है।
VI
वैदर्भी रीति का प्रयोग है।
VII
भाषा ब्रज भाषा जो अत्यंत सरस व सरल है।
VIII

16 " स्वतंत्रता सेनानी . . . . .

बुझाते रहेंगे।"

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश महान एकांकीकार, नाटककार, साहित्य अकादमी पुरस्कार से अलंकृत, हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठापक, उन्नायक 'लक्ष्मीनारायण रंगा' द्वारा रचित उनकी लब्ध प्रतिष्ठित एकांकी 'अमर शहीद' से लिया गया है।

लक्ष्मीनारायण रंगा ने देश-प्रेम से अभिभूत तथा ओजपूर्ण शैली मे साहित्य सृजन किया है। रंगा जी ने प्रस्तुत गद्यांश मे राजस्थान के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रेरणा-स्रोत सागरमल गोपा द्वारा अपनी मातृभूमि की रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग करने का वर्णन है जिसमे उन्होंने जैसलमेर राज्य के गुंडा-शासन के विरोध मे आवाज उठाई तो सत्ताधारी वर्ग ने उन्हें बंदी बनाया तथा नारकीय यातनाएँ देकर उससे माफीनामे पर हस्ताक्षर करने को मजबूर किया परंतु वो किसी भी प्रलोभन मे न झुककर अंततः वीरगति को प्राप्त हो गया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्याख्या :-

जब जैसलमेर राज्य की जेल का प्रबंधक जेलर करणीदान सागर को प्रलोभन देता है तथा उसे अपने कर्त्तव्य से विमुख करना चाहता है तो जेलर इसी कारण सागर से कहता है कि सागर तुझे तो गारत की स्वतंत्रता मिल गई तो तुम्हें क्या लाभ तुम्हारी प्राणज्योति तो हमेशा के लिए बुझ जाएगी।

सागरमल गोपा अपने प्रत्युत्तर स्वरूप कहता है कि जेलर साहब हम स्वतंत्रता के दीवाने संसार से कुछ लेने की नहीं अपितु कुछ देने की अपेक्षा करते हैं जैसे आम का पेड़ जो रोपता है तो उसका फल नहीं मिलता बल्कि वो तो अपने प्राणों से पूरी मेहनत करके जी-जान लगाकर उसे बड़ा करता है यह जानते हुए कि यह फल उसको नहीं मिलने वाला वैसे ही हम सभी भी इसी भावना से गुजरते हैं कि हमें हमारे प्राणों की परवाह न करके अपनी माँ की माँ अर्थात् मातृभूमि को स्वतंत करना है। जिस प्रकार भागीरथ नामक प्रतापी राजा गंगा को परहित, परोपकार के लिए ले आया था अर्थात् कोई गम नहीं यदि हम इस संघर्ष में मारे जाएँ।
जैसा कि कहा भी है—

" क्या हुआ नींद आई तो
हम सो गए
तुमको आजादी का रंग लगा
के चले
कभी बुझने ना देना उस आग को
.. आग सीनों में हम जो
लगा के चले ।"

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विशेष :- i. सागरमल गोपा के पराक्रम, निर्भयता, संघर्षशीलता, देशप्रेम, त्याग का भाव इस गद्यांश में मुखरित है।

ii. सागरमल गोपा नामक क्रांतिकारी की कथा का सुबग-वर्णन किया गया है।

iii. तन-मन :- तन और मन, द्वन्द्व समास

भागीरथी :- भागीरथ द्वारा लायी गंगा नदी।

iv. स्वतंत्रता संग्राम :- स्वतंत्रता के लिए संग्राम, तत्पुरुष समास

v. संवाद योजना में ओज शैली का प्रयोग पाठकों का

vi. ध्यान आकर्षित करता है।

vii. तात्विक दृष्टि से सफल एकांकी का उज्ज्वल नमूना है।

17. छायावाद के ब्रह्म कहे जाने वाले महान कवि जयशंकर-प्रसाद अपनी 'प्रभो' कविता के माध्यम से उस परमात्मा, परमेश्वर, परमब्रह्म की सर्वव्यापकता, सौंदर्यता तथा शक्तिमता का गुणकथन किया है।

कवि जयशंकर जी के अनुसार चंद्र किरणे उस परमात्मा का ही प्रकाश अभिव्यक्त कर रही हैं तथा उस अनादि, अनन्त परमात्मा की असीम लीला का वर्णन कर रही है—

जैसे :- "विमल इंदु की विशाल किरणे
प्रकाश तेरा बता रही हैं
अनादि तेरी अनंत माया
जगत को लीला दिखा रही है।"

कवि को सागर की उत्ताल किरणें परमात्मा के दया प्रसार सी लग रही हैं तथा उसकी की प्रशंसा का राग गा रही हैं —

जैसे :- " तेरी दया का प्रसार कितना
ये देखना है तो देखें सागर
तेरी प्रशंसा का राग प्यारे
तरंग मालाएँ गा रही हैं।"

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कवि के अनुसार विशाल मंदिर में चमके दीपकों की तरह आकाश में फैला तारागणों का प्रकाश उस अनादि की महिमा का नजारा है -

जैसे :- " विशाल मंदिर की यामिनी में
जिसे देखना हो दीपमाला
तो तारकागण की ज्योति उसका
पता अनूठा बता रही है।"

वह ईश्वर संसार के सभी मनोरथों को पूरा करने वाला है तथा उसकी कृपा होने पर मानवों के सारे काम होते हैं—

जैसे :- " जो तेरी होवे दया दयानिधि
तो पूरा होता ही है मनोरथ
सभी ये कहते पुकार करके
यही तो आशा दिला रही है।"

इस प्रकार प्रस्तुत कविता के द्वारा कवि प्रसाद जी ने अपनी स्वाभाविकता, प्रसादयुक्त रचना करके उस परमात्मा की विशेषताएँ चित्रित की हैं। वास्तव में किसी ने सच ही कहा है—

" तेरी सत्ता के बिना
हे प्रभो मंगल मूल
पत्ता तक हिलता नहीं
खिले न कोई फूल।"

18 लोक संत पीपा का जन्म वि० सं० 1380 में गागरौन में खींची चौहान राजवंश में हुआ था उनकी पत्नी का नाम सीता था प्रारंभ में पीपा एक आकर्षक एवं युवा व्यक्तित्व के धनी शुरा थे तथा प्रजा वत्सल, प्रिय, वीर योद्धा तथा देवी दुर्गा के सच्चे उपासक थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

संत पीपा के गुरू का नाम रामानंद माना जाता है। ये वैष्णव भक्त मंडली के मुखिया के आग्रह पर उनसे मिलने गए तो त्रिकालदर्शी रामानंद जी ने इनसे एक ही बात कही थी—

" राम नाम का आंचल मत छोड़ना। राम नाम ही सर्वोपरि हो।"

पीपा इनसे प्रभावित होकर सन्यासी बन गए तथा दिन-रात हरि सुमरन में समय व्यतीत होने लगा। उन्होंने गरीब वर्गों के हृदय में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, दृढ़-पराक्रम जगाया।

संत पीपा कहते थे कि पंडित लोग पूजन सामग्री से पूजा करते हैं परंतु पूजा की सारी सामग्री तो शरीर में है.

यथा :— " काइयाउ देवा काइयाउ देवल काइयाउ पूजत पाती
काइयाउ धूप दीप नहीं देवा काइयाउ पूजत जाती।

संत पीपा माँस भक्षण की सर्वथा निंदा किया करते थे

यथा:—

" जीव मार जीमण करें खाता करें बखाण
पीपा परतख देख ले थालि मांहि मसाण।"

संत पीपा कहते थे कि परमात्मा की दृष्टि में सभी समान हैं कोई छोटा बड़ा नहीं सभी उस परमात्मा की महासागर रूपी बूंद हैं।

यथा:— " एकै मारग ते सब आया
एकै मारग जाही
एकौ मात-पिता सबही के
विप्र शूद्र कोउ नाहीं।"

संत पीपा एक राजा होकर राज्य वैभव को छोड़कर समाज सुधार में लगे रहे तथा पूरा जीवन जीवमात्र की समानता में लगा दिया। किसी ने सच ही कहा है—

" समय है नदी की धारा सब जन बह
जाया करते हैं होते हैं कोई-कोई जो
इतिहास रचाया करते हैं।"

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

19. प्रस्तुत सोरठे के माध्यम से कवि कृपाराम खिड़िया जीवन में वाणी के महत्व को सिद्ध करते हैं कि मनुष्य को अच्छी व मधुर वाणी बोलनी चाहिए। जैसे कोयल की वाणी मन में मधुर प्रेम उत्पन्न करती है तथा काक अर्थात् कौआ तो हमेशा कड़ता ही लगता है। जैसा कि कहा भी है—

" पाटा पीड़ उपात तन लागा तरवारिया
वहै जीभ रा घाव रती न ओखद राजिया"

20. 'मातृवंदना' कविता में प्रगतिवादी काव्यधारा के लब्ध प्रतिष्ठित 'साहित्यकार 'नागार्जुन' जी अपने जीवन में कड़े श्रम से अर्जित कर्मफलों को माँ भारती के चरणों में समर्पित कर देना चाहता है—

यथा :— " नए जीवन के स्वार्थ सकल
बलि हों तेरे चरणों पर माँ
मेरे श्रम सिंचित सब फल।"

कवि नागार्जुन अपनी तन, मन, धन से भारतमाता को स्वतंत्र करना चाहता था तथा सभी पुष्प कर्मों को त्याग कर कष्टों, दुःखों का वरण करना चाहता है।

जैसे कहा भी है— " देश भक्त वीरों मरने से नेक नहीं
डरना होगा प्राणों का बलिदान
देश की वेदी पर करना होगा।"

21. ' कन्यादान' कविता वर्तमान युग में सर्वथा प्रासंगिक है क्योंकि कवि ऋतुराज जी के अनुसार

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

इस कविता में माँ बेटी को परंपरागत आदर्शों से हटकर सीख दे रही क्योंकि उसे तैंतालिक जीवन में प्रवेश करने जा रही है उसे विवाह सुख देने वाला उत्सव दिख रहा है पर वह भावी जीवन की कठिनाइयों से अनभिज्ञ है तो उसे आग में जलाकर मार दिया जाता है तथा आत्महत्या तक के लिए मजबूर किया जाता है अतः माँ अपनी बेटी को दाम्पत्य जीवन की कठिनाइयों से जानकारी कराकर अबला ना बनते हुए 'सबला' शब्द की प्रासंगिता को सिद्ध करने की सीख दे रही है।

जैसे :— " आग में झांककर अपने चेहरे पर
मत रीझना आँच रोटियाँ सेकने के
लिए हैं जलने के लिए नहीं
बेटी होना पर बेटी जैसा
दिखना मत ।"

22. लेखक 'भारतेंदु हरिश्चंद्र' ने देवालय बनवाने का विचार इसलिए त्याग दिया क्योंकि उस समय में अंग्रेजी शिक्षा प्रचलित थी तथा देवालयों का महत्व ही घट रहा था अतः लेखकानुसार जब कोई मंदिरों की ओर झाँकेगा ही नहीं तो उसके निर्माणकर्ता के बारे में भी कोई नहीं सोचेगा तथा लेखक का नाम भी अमर नहीं होगा ।

जैसे :- "यदि अंग्रेजी शिक्षा चलती रही तो मंदिरों की ओर मुँह मोड़कर भी कोई नहीं देखेगा ।"

23. 'भारत प्रकृति का खूबसूरत उपहार है' । कथन के आलोक में कन्याकुमारी के मनोरम सूर्योदय तथा सूर्यास्त का वर्णन किया है। भौतिक संरचना की सूक्ष्म समझ के कारण यह आंतरिक मनोदशा का उद्घाटन बन गया है। कन्याकुमारी में वह चट्टान है जहाँ विवेकानंद ने समाधि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

लगायी थी। यह हिंद महासागर, बंगाल की खाड़ी तथा अरब सागर के संगम पर बनी थी। वहाँ के मन्दिरों में पूजा की घंटियाँ बजती है। मनोरम धूल पायी जाती है— लाल, पीली, सुनहली।

इस प्रकार लेखक मोहन राकेश इस पाठ के आधार पर भारत की अद्भुद धरा का चित्र प्रस्तुत करते हैं।

जैसा कि कहा है— " अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पँहुच अंजान क्षितिज को
मिलता एक सहारा।"

24 संत दादू दयाल ने अपने शिष्यों को शिक्षा दी थी कि वे परनिंदा न किया करें क्योंकि परनिंदा तो वह व्यक्ति करता है जिसके हृदय में राम नहीं रहता।

जैसे:- 'निंदा स्तुति एक करि तोले तासों कहे
अपवाद ही बोले, दादू निंदा ताको भावे
जाके हिरदै राम न आवे।

इस प्रकार संत दादू ने निंदा स्तुति को समभाव से ग्रहण करने की बात कही थी।

25 कल्याणपुर, सांभर, आमेर, नराणा, भैराणा दादू के पंचतीर्थ थे।

26 संत पीपा का जीवन 'राम' सुमिरन में व्यतीत हुआ तथा यह संसार और शरीर उन्हे मिथ्या लगने लगा। अत: राजकाज में मन उचाट गया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

27. श्याम ने झूला झूलने के लिए नायिका/गोपी को आमंत्रित किया था

28. खेतों की मिट्टी इसलिए पथराई हुई थी क्योंकि वर्षा नहीं हो रही थी तथा भीषण गर्मी पड़ रही थी।

29.
महाकवि निराला

छायावाद के शिव कहे जाने वाले, ओज एवं औदात्य के सम्राट, प्रतिभा के वरद पुत्र सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म 1896 में बंगाल के मेदिनीपुर में हुआ था। आरंभिक शिक्षा घर पर हुई तथा तीन वर्ष की उम्र में माँ, युवावस्था में पिता तथा विश्व युद्ध में फैली महामारी में चाचा, भाई, भाभी और पत्नी मनोरमा की मौत ने उन्हें अंत तक झकझोर दिया तथा बाकी जीवन संघर्षों में बीता था।

निराला का अवतरण हिंदी साहित्य में एक विशेष अवदान माना जाता है। उनका पूरा जीवन प्रतिभा का अनोखा सम्मिश्रण था। वे कबीर की सी रूढ़ियों पर निर्मम प्रहार की अक्खड़ता लेकर, तुलसी की सी सूक्ष्म दृष्टि, बिहारी का सा काव्य सौंदर्य, रवींद्र की सी मनस्विता लेकर पैदा हुए थे उन्हीं के शब्दों में कारीगर के कुशल हाथ, पहलवान का सीना, दार्शनिक के चरण तथा कवि की वाणी उनके पास थी। उनकी रचनाओं में अन्याय के प्रति अदम्य व्यंग, आक्रोश झलकता है तथा उनका काव्य हिंदी में मील का पत्थर है।

रचनाएं :-

अनामिका, परिमल, गीतिका, राम की शक्ति, पूजा, अर्चना, आराधना आदि।

इनकी मृत्यु सन् 1961 में हुई थी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

29 → 11.

कवि देव :-

कवि देव रीतिकाल के प्रमुख रीतिबद्ध कवि थे उनका जन्म सन् 1673 में इटावा (कुसमरा) में हुआ था। उनके जन्म स्थान के बारे में उक्ति प्रचलित है—

" द्यौसा रिया कवि देव को
नगर इटावो वास।"

कवि देव के पिता का नाम बिहारी लाल दुबे था। कवि देव की रचनाओं में श्रृंगार रस का उच्छल प्रवाह है और यह श्रृंगारिकता कोई छिछली नहीं बल्कि उसमें विशेष गांभीर्यता विद्यमान है। कवि देव के 52 से 72 ग्रंथ माने जाते हैं परंतु उनमें से 15 ही प्राप्य हैं।

रचना- भावविलास, भवानी विलास, रसविलास, कुशलविलास, प्रेम तरंग, देवचरित, देवमाया प्रपंच।

ऐसे उस श्रृंगारिक कवि, कृष्ण का गुणकथन कर स्वयं को धन्य करने वाले कवि देव का देहांत सन् 1767 में हुआ था।

प्र 30

(i) एक ही रास्ता संकेत

(ii) साईकिल पर प्रतिबंध

(iii) हॉर्न / ध्वनि पर प्रतिबंध

(iv) चौड़ाई सीमा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड-2

8. प्रेषक
तहसीलदार
भीण्डर
पत्रांक- 25-26/115-16

प्रापक
जिलाधीश महोदया
जिला मुख्यालय
उदयपुर

विषय:- जल व्यवस्था हेतु बजट की माँग हेतु

उपर्युक्त विषयान्तर्गत महोदया जी से सविनय निवेदन है कि हमारी तहसील भीण्डर में व्यापक जल संकट व्याप्त है। जलापूर्ति हेतु उचित व्यवस्था का क्रियान्वयन नहीं है लोग त्रास हेतु व्याकुल है आपने पहले जो बजट भेजा था वह तहसील की जलापूर्ति करने में असमर्थ सक्षम है जिससे यहाँ लोगों को जल उचित मात्रा में नहीं मिल रहा है। अतः आपसे निवेदन है कि कृपया बजट को बढ़ाकर जल व्यवस्था समुचित कराने में सहयोग कर हमें अनुग्रहीत करें।

तहसीलदार
तुषार शर्मा
भीण्डर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	7	निबंध

आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या

रूपरेखा
- प्रस्तावना - आतंकवाद की परिभाषा
- आतंकवाद का आशय
- आतंकवाद फैलाने का कारण / उद्देश्य
- आतंकवाद के परिणाम
- आतंकवाद रोकने के उपाय
- उपसंहार

प्रस्तावना :- भारत एक ऐसा देश जो जनसंख्या के लिहाज से संसार में II स्थान रखता है जो क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार में 7 वां स्थान रखता है जो कभी 'विश्वगुरु' व सोने की चिड़िया जैसी उपाधियों से अलंकृत था। जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था

" देखो विश्व में हमारा
कोई नहीं उपमान था
नरदेव थे हम
और भारत देवलोक
समान था।"

आज वह देश अपने विकास तक के लिए संघर्ष कर रहा है। कई प्रभावी आयामों में से आतंकवाद भी प्रमुख आयाम है। जनता को डरा-धमकाकर विधिसम्मत सरकार के विरुद्ध हिंसात्मक कार्यवाही करना या जनमानस में भय का संचार आतंकवाद

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कहलाता है।

आतंकवाद से आशय -

हमारे देश और संसार मे कुछ ऐसे संकीर्ण विचारधारा वाले लोग रहते हैं जो स्वयं के निजी स्वार्थों की खातिर अपने देश से द्रोह करते हैं। आतंकवादी संगठन बनाकर अपने लोगों की रंग- बिरंगी दुनिया को आबाद करने की बजाय अत्याचार करते हैं नरसंहार करते हैं तथा हत्या करते हैं।

प्रमुख आतंकवादी हमले व संगठन :-

जैश ए मोहम्मद
लश्कर- ए- तोयबा — संगठन
बगदाद

मुंबई - 195 मौतें
अक्षरधाम — हमले
दिल्ली
संसदीय भवन - 2001

ये आतंकवादी ये नहीं देखते कि मातृभूमि से गद्दारी करना कितना बड़ा पाप है।
जैसा कि कहा गया है—

" हम कहते हैं इंसानों से इंसानो से
प्यार रहे। वो कहते हैं खून खराबा होने दो
हम कहते हैं बेघर, बेदर को आबाद करो
हम कहते हैं रामनाम में जैसा हुआ
वैसा होने दो
वो कहते हैं नरसंहार हमारा कर्तव्य है
उसे होने दो।"

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

आतंकवाद फैलाने का कारण :-

आतंकवाद फैलाने के निम्न कारण हो सकते हैं -

(i) युवाओं में रोजगार का अभाव तथा बेरोजगारी की समस्या में जटिलता।

(ii) युवाओं में संकीर्ण विचारधारा का प्रकोप।
(iii) सरकारी नीतियों में लोचशीलता।
(iv) गरीबी तथा भयंकर आर्थिक संकट
(v) सेनाओं को पूरी छूट न देना।
(vi) सेनाओं पर प्रतिबंध लगाना।

तथा कुछ देश अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए आतंकवाद को बढ़ावा देते हैं। जैसा कि कहा जाता है कि आतंकवाद दानव है जिसका अंत नहीं हो सकता है परंतु मेरी नजर में -

" है कौन सा विघ्न संसार में
जो टिक सके आदमी के
मग में
मानव जब जोर लगाता है
पत्थर पानी बन जाता है "
गुण बड़े एक से एक प्रखर हैं
छिपे मानवों के भीतर।

अतः सरकार की हिंसात्मक नीतियां भी आतंकवाद के लिए न्यूनाधिक रूप से उत्तरदायी हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

आतंकवाद के परिणाम :-

आतंकवाद एक ऐसा राक्षस है जो मानवता को क्षण भर में नष्ट कर सकता है इसके परिणाम निम्न हैं -

(i) भयानक नरसंहार ।
(ii) व्यापी खून खराबा ।
(iii) मानवता का विध्वंस ।
(iv) राष्ट्र की अस्मिता, अखण्डता को खतरा ।
(v) संस्कार को नष्ट करना ।
(vi) शासनतंत्र का विफल होना ।
(vii) युवाओं का भ्रष्ट होना ।
(viii) स्वार्थपरता की भावना ।

जबकि भारत तो एक ऐसा देश रहा था जहाँ पूरे विश्व के लिए-

1 - 'वसुधैव कुटुम्बकम्'

2 - 'सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामया'

जैसी भावनाएं रही हैं । इसी आतंकवाद को देखते हुए अटलबिहारी बाजपेयी ने कहा था

"बाधाएँ आएं तो आएं घिरें
प्रलय की ओर घटाएं
पाँवों के नीचे अंगारे
या बरसें सिर पर ज्वालाएं
निज हाथों में आग लगाकर
हँसते - हँसते जलना होगा
पर कदम मिलाकर चलना होगा ।"

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

आतंकवाद रोकने के उपाय :-

आतंकवाद जैसे दानव को खत्म करने के उपाय अग्रांकित हैं—

I— युवाओं को रोजगारी मिले।

II— भारत का आर्थिक विकास।

III— पड़ोसी राष्ट्रों से संधिवार्ता।

IV. विश्व शांति के लिए प्रतिबद्ध होकर शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को स्वीकारना।

V. सेनाओं को पूरी छूट दी जाए।

VI. सरकार की लोचशीलता में कमी आए।

VII. भ्रष्टाचार पर प्रभावी अंकुश लगाना अनिवार्य है।

आतंकवाद को खत्म करने के संबंध में कहा गया है कि—

"माना अब दूर किनारा है
पर सागर ने ललकारा है
अब बाँध हाथ बैठे रहना
वीरों को नहीं गंवारा है"

हमें पूरी निष्ठा के साथ इस समस्या को

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उपसंहार :-

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यदि भारत की अस्मिता को बचाना है तो इस समस्या से लड़ना ही होगा।

मैथिलीशरण गुप्तजी की टिप्पणी :-

" आग लगी एक वृक्ष में
जल रहे सारे पात
हे पंछी तुम क्यों जलो
जब पंख तुम्हारे साथ।

पक्षियों का उत्तर :-

" फल खाए इस वृक्ष के गंदे
किए पात
अब धर्म हमारा यही है
कि जलें इसी के साथ।"

इस प्रकार हमें पक्षियों की देशप्रेम की भावना को अपनाते हुए अपने देश की उन्नति में दिलोजान से प्रयत्न रहना चाहिए क्योंकि कहा गया है -

" हम लोगों को समझ सको
तो समझो दिलबर जानी
मर जाएंगे मिट जाएंगे पर कि देंगे
हर कुर्बानी
क्योंकि दिल है हिन्दुस्तानी।"

अतः हमें पक्षियों व भारतीयों में समान कर्त्तव्यबोध के साथ इस समस्या से लड़ना है।

समाप्त

BSER-164/2018